PSC ACADEMY

INDIAN HISTORY

By RAKESH SAO

विषय-सूची

गौतम बुद्ध

सामान्य परिचय

- जन्म - 563 ई.पू. (दिन - वैशाख पूर्णिमा)
- जन्म स्थान - लुम्बनी ग्राम , राज्य - कपिलवस्तु , नेपाल के तराई में
- स्त्रोत - अशोक के रुमिनदेई स्तंभ अभिलेख
- मृत्यु - 483 ई.पू. (दिन - वैशाख पूर्णिमा)
- मृत्यु स्थान - कुशीनारा (कुशीनगर) , जिला - देवरिया , उत्तर प्रदेश
- आयु - 80 वर्ष
- मूलनाम - सिद्धार्थ
- अन्य नाम - तथागत (सत्य है ज्ञान जिसका)
- कुल - शाक्य क्षत्रिय कुल
- गौत्र - गौतम

पारिवारिक परिचय

- पिता - शुद्धोधन (शाक्य क्षत्रिय कुल के शासक)
- माता - महामाया / मायादेवी (कोलिय वंश)
- पालने वाली माता - महाप्रजापति गौतमी (सिद्धार्थ की मौसी)

  गौतम बुद्ध की माता **महामाया** की मृत्यु इनके जन्म के **7वें दिन** ही हो गयी थी |
- भाई - नन्दी (महाप्रजापति गौतमी का पुत्र)
- बहन - नन्दा (महाप्रजापति गौतमी का पुत्री)
- चचेरा भाई - देवदत्त
- पत्नी - यशोधरा (शाक्य क्षत्रिय कुल)
- विवाह के समय आयु - 16 वर्ष
- पुत्र का नाम - राहुल

गौतम बुद्ध के गुरु

क्रम	गुरु	स्थान	विशेष
प्रथम गुरु	अलारकलाम	वैशाली	सांख्य दर्शन के आचार्य
दूसरे गुरु	रुद्रकरामपुत्त	राजगृह	

गौतम बुद्ध के शिष्य

- प्रथम शिष्य
  1. कौण्डिन्य
  2. वप्पा
  3. भादिया
  4. महानामा
  5. अस्सागी
- प्रथम शिष्या - महाप्रजापति गौतमी (बुद्ध की माता)
- बुद्ध के प्रिय शिष्य - आनंद , ऊपाली

क्रम	शिष्य	स्थान
1	कौण्डिन्य , वप्पा , भादिया , महानामा , अस्सागी	ऋषिपतनम (सारनाथ)
2	यश	वाराणसी
3	आनंद उपाली महाप्रजापति गौतमी (बुद्ध की माता) यशोधरा (गौतम बुद्ध की पत्नी) नन्दा (महाप्रजापति गौतमी का पुत्री) क्षेमा (बिम्बिसार की पत्नी) आम्रपाली (वैशाली की नगरवधु)	वैशाली
4	बिम्बिसार मुख्य कश्यप नदी कश्यप गया कश्यप	राजगृह
5	उदयन सामावती (उदयन की पत्नी) पिण्डोला भारद्वाज	कौशाम्बी
6	अनाथपिण्डक प्रसेनजीत मल्लिका (प्रसेनजीत की पत्नी) विशाखा अंगुलीमाल (डाकू)	श्रावस्ती
7	चुंद	पावा
8	सुभद्द	कुशीनगर

गौतम बुद्ध के शिष्यायें

क्रम	शिष्या	विवरण	स्थान
1	महाप्रजापति गौतमी	बुद्ध की मौसी व विमाता	वैशाली
2	यशोधरा	बुद्ध की पत्नी	
3	नन्दा	महाप्रजापति गौतमी का पुत्री	
4	क्षेमा	बिम्बिसार की पत्नी	
5	आम्रपाली	वैशाली की नगरवधू आम्रपाली वन का निर्माण	
6	विशाखा	अंग जनपद के श्रेष्ठी की पुत्री	श्रावस्ती
7	मल्लिका	प्रसेनजीत की पत्नी	
8	सामावती	उदयन की पत्नी	कौशाम्बी

बौद्ध धर्म के अनुयायी शासक

क्र.	शासक	राजधानी	विशेष
1	बिम्बिसार	गिरिब्रिज	
2	अजातशत्रु	राजगृह	
3	अशोक	पाटलिपुत्र	
4	कनिष्क	पेशावर व मथुरा	
5	हर्षवर्धन	कन्नौज	
6	उदयन	कौशाम्बी	
7	प्रसेनजीत	कोशल	
8	प्रघोत	अवन्ती	
9	पालवंश	बंगाल	वज्रयान सम्प्रदाय को मानने वाले बौद्ध धर्म के अंतिम महान संरक्षक

गौतम बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएँ

कपिलवस्तु की सैर

- घोड़े का नाम - कन्टक (कंथक)
- सारथी का नाम - छन्दक (चाण / चन्ना)
- सिद्धार्थ जब कपिलवस्तु की सैर पर निकले तो उन्होंने निम्न 4 दृश्यों को क्रमशः देखा -
  1. बूढ़ा व्यक्ति
  2. एक बीमार व्यक्ति
  3. शव
  4. एक सन्यासी

महाभिनिष्क्रमण (गृह त्याग)

- सांसारिक कष्टों से दु:खी होकर सिद्धार्थ ने पूर्णमासी के दिन 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया | इसे बौद्ध धर्म में **महाभिनिष्क्रमण** कहा गया |
- गृहत्याग - 29 की उम्र में (महाभिनिष्क्रमण)
- दिन - पूर्णमासी

अलारकलाम (वैशाली)

- प्रथम गुरु - अलारकलाम (सांख्य दर्शन के आचार्य)
- स्थान - वैशाली

  महाभिनिष्क्रमण के बाद ज्ञान की खोज में महात्मा बुद्ध , आलार कालाम के आश्रम (वैशाली) पहुँचे तथा उनसे दीक्षा ली | कालाम के आश्रम में उन्होंने तपस्या की किन्तु बुद्ध इससे संतुष्ट नही हुए | आलार कालाम के बाद बुद्ध ने राजगृह के रुद्रकरामपुत्त से शिक्षा ग्रहण की |

रुद्रकरामपुत्त (राजगृह)

- दूसरे गुरु - रुद्रकरामपुत्त
- स्थान - राजगृह

उरूवेला

- उरूवेला - बोधगया के समीप एक स्थल
- उरूवेला में सिद्धार्थ को 5 साधक मिले :
  1. कौण्डिन्य

2. वप्पा
3. भादिया
4. महानामा
5. अस्सागी

- उरूवेला में सिद्धार्थ ने तपस्या किया - 27 दिन
- सिद्धार्थ को खीर (भोजन) देने वाली महिला - सुजाता (सैनिक की पुत्री)

  उरूवेला में 27 दिन की तपस्या करने के पश्चात इन्होनें एक सैनिक की पुत्री सुजाता से भोजन ग्रहण किया | इसके कारण इनके 5 साथी इनका साथ छोड़कर चले गये |

सम्बोधि (ज्ञान प्राप्ति)

- 6 वर्ष तप करने करने के पश्चात् 35 वर्ष की उम्र में **बैशाख पूर्णिमा** के दिन सिद्धार्थ को ज्ञान की प्राप्ति हुई | इसे बौद्ध धर्म में **सम्बोधि** कहा गया |
- ज्ञान प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ **बुद्ध** कहलाये तथा वह स्थान **बोधगया** कहलाया |
- आयु - 35 वर्ष

  6 वर्ष तप करने करने के पश्चात् 35 वर्ष की उम्र में (29.06.35)
- दिन - बैशाख पूर्णिमा
- स्थल - बोधगया
- नदी - निरंजना नदी के तट पर
- वृक्ष - पीपल वृक्ष के नीचे
- स्मृति - महाबोधि मंदिर

धर्मचक्र प्रवर्तन (प्रथम उपदेश)

- गौतम बुद्ध ने सारनाथ में 5 विद्यार्थियो को प्रथम उपदेश दिया जिसे **धर्मचक्र प्रवर्तन** कहते है |
- स्थान - ऋषिपतनम (सारनाथ)
- दिन - वैशाख पूर्णिमा
- शीर्षक - आचरण की शुद्धता
- सारनाथ में गौतम बुद्ध ने अपने 5 विधार्थी को प्रथम उपदेश दिया :

1. कौण्डिन्य
2. वप्पा
3. भादिया
4. महानामा
5. अस्सागी

यश (वाराणसी)

- वाराणसी में शिष्य - यश (एक धनी श्रेष्ठीपुत्र)
  गौतम बुद्ध सारनाथ से वाराणसी गये और यश नामक एक धनी श्रेष्ठीपुत्र को अपना शिष्य बनाया |
- वाराणसी में शिष्यों की संख्या - 60
- **संघ**
  - गौतम बुद्ध ने वाराणसी में ही संघ की स्थापना की |
  - सदस्यता की आयु सीमा - 18 वर्ष
  - उद्देश्य - बहुजन हितार्थ (बहुजन सुखार्थ)

राजगृह (मगध की राजधानी)

- मगध का शासक - बिम्बिसार
- बुद्ध का प्रथम विहार - वेलुवन
- **वेलुवन**
  बिम्बिसार ने गौतम बुद्ध के निवास के लिए वेलुवन नामक विहार बनवाया |
- **कश्यप बंधू (मुख्य कश्यप , नदी कश्यप , गया कश्यप)**
  राजगृह में गौतम बुद्ध ने कश्यप बंधुयों को अपने ज्ञान से परास्त किया तथा उन्हें बौद्ध धर्म में दीक्षित किया |

कपिलवस्तु

- राजगृह में रहते हुए गौतम बुद्ध एक बार अपने गृह नगर कपिलवस्तु आये थे |
- कपिलवस्तु में बुद्ध के आगमन के समय इनके भाई नन्दी का राज्याभिषेक हो रहा था |
- गौतम बुद्ध ने कपिलवस्तु में दीक्षा दिया - **नन्दी** को
- **नियम : पिता की अनुमति**
  बुद्ध ने कपिलवस्तु में ही यह नियम बनाया की कोई भी व्यक्ति अपने पिता के अनुमति के बिना बौद्ध धर्म में दीक्षित नहीं हो सकता है |
- **महाप्रजापति गौतमी (बुद्ध की मौसी)**
  कपिलवस्तु में ही बुद्ध की मौसी महाप्रजापति गौतमी ने **संघ में प्रवेश का आग्रह** किया लेकिन बुद्ध ने इसे **अस्वीकार** किया |
- **देवदत्त (बुद्ध का चचेरा भाई)**
  देवदत्त संघ का प्रधान बनना चाहता था इसकारण इसने बुद्ध पर तीन बार हमला करवाया |
- **जीवक (बिम्बिसार का राजवैध)**
  तीसरी बार देवदत्त ने गिद्धकूट पहाड़ी से शिलाखण्ड फेंककर बुद्ध को घायल कर दिया इसका उपचार बिम्बिसार के राजवैध जीवक ने किया |

वैशाली

- वैशाली में शिष्य - आनंद
- **नियम : संघ में महिलाओं का प्रवेश**
  वैशाली में बौद्ध संघ में स्त्रियों के प्रवेश के लिए बुद्ध ने अनुमति दिया |
- बौद्ध संघ में स्त्रियों के प्रवेश के लिए बुद्ध से अनुग्रह किया - शिष्य आनंद
- बौद्ध संघ में सर्वप्रथम शामिल होने वाली स्त्री थी - महाप्रजापति गौतमी (बुद्ध की माता)
- महाप्रजापति गौतमी के बाद बुद्ध ने संघ में निम्न महिलाओं शामिल किया
  1. यशोधरा (गौतम बुद्ध की पत्नी)
  2. खेमा (बिम्बिसार की पत्नी)
  3. आम्रपाली (वैशाली की नगरवधु)

कौशाम्बी

- कौशाम्बी के शासक - उदयन
- बुद्ध के शिष्य - **पिण्डोला भारद्वाज**
- उदयन ने पिण्डोला भारद्वाज के अनुग्रह पर शिष्यता ग्रहण की |
- **घोषितराम विहार** - उदयन ने बुद्ध को घोषितराम विहार भेंट किया |

श्रावस्ती (कोसल राज्य)

- गौतम बुद्ध ने अपने सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिए |
- गौतम बुद्ध ने अपने जीवन के 21 वर्ष श्रावस्ती में व्यतीत किये |
- **जेतवन विहार**
  - राजकुमार - जेत
  - व्यापारी का नाम - अनाथपिण्डक
  - अनाथपिण्डक ने राजकुमार जेत से जेतवन विहार **18 करोड़ स्वर्ण मुद्राओं** में खरीदकर बुद्ध को दान में दिया |

- **पूर्वाराम विहार**
  - कोशल के शासक - प्रसेनजीत
  - प्रसेनजीत ने अपने परिवार के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण किया तथा **पूर्वाराम विहार** बुद्ध को को दान में दिया |
- **अंगुलीमाल (डाकू)**
  श्रावस्ती में गौतम बुद्ध ने अंगुलीमाल नामक डाकू को संघ में शामिल किया |

पावा (मल्लों की राजधानी)

- पावा में शिष्य - चुंद
- चुंद ने गौतम बुद्ध को खिलाया - सुकरमाद्दव
- सुकरमाद्दव भोज्य सामग्री खाने से गौतम बुद्ध पीड़ित हो गये - अतिसार रोग से

कुशीनगर (मल्ल)

- कुशीनगर में शिष्य - सुभद्द
- अंतिम उपदेश - कुशीनगर (राज्य - मल्ल)
- बुद्ध के द्वारा अंतिम शिक्षा (उपदेश) पाने वाला व्यक्ति - सुभद्द (कुशीनगर)
  अपने जीवन के अंतिम वर्ष में गौतम बुद्ध अपने शिष्य **चुंद** के घर पावा पहुँचे | यहाँ **सुकरमाद्दव** भोज्य सामग्री खाने से वे **अतिसार रोग** से पीड़ित हो गये | फिर वे पावा से कुशीनगर चले गये और यहीं पर सुभद्द को उन्होंने अपना अंतिम उपदेश दिया | और यहीं गौतम बुद्ध की 80 वर्ष की आयु में 483 ई.पू. में मृत्यु हो गयी |

महापरिनिर्वाण

- कुशीनगर में गौतम बुद्ध ने निर्वाण को प्राप्त किया जिसे महापरिनिर्वाण कहा गया |
- स्थान - कुशीनारा (कुशीनगर) , जिला - देवरिया , उत्तर प्रदेश
- 483 ई.पू. - गौतम बुद्ध की मृत्यु
- आयु - 80 वर्ष
- दिन - वैशाख पूर्णिमा

वैशाख पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा)

- **बुद्ध का जन्म** , **ज्ञान प्राप्ति** व **महापरिनिर्वाण** तीनों **वैशाख पूर्णिमा** के दिन हुआ था इसलिए वैशाख पूर्णिमा को **बुद्ध पूर्णिमा** के रूप में मनाया जाता है |

गौतम बुद्ध के उपदेश

- बुद्ध के उपदेश - आचरण की शुद्धता व पवित्रता
- भाषा - पाली
- सर्वाधिक उपदेश - श्रावस्ती (कोसल राज्य)
- प्रथम उपदेश - ऋषिपतनम (सारनाथ)
- अंतिम उपदेश - कुशीनगर
- बुद्ध के द्वारा अंतिम शिक्षा (उपदेश) पाने वाला व्यक्ति - **सुभद्द** (कुशीनगर)

गौतम बुद्ध के जीवन के प्रतीक चिन्ह

क्रम	घटना	चिन्ह	चित्र
1	गर्भ	हाथी	
2	जन्म	कमल	
3	यौवन	सांड	
4	गृह त्याग	घोड़ा	
5	ज्ञान	पीपल	
6	प्रथम प्रवचन	चक्र	
7	निर्वाण	पद चिन्ह	
8	मृत्यु	स्तूप	

बौद्ध धर्म के सिद्धांत

त्रिरत्न

- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न - बुद्ध , धम्म , संघ

4 आर्य सत्य

- बुद्ध ने सांसारिक दुखो के सम्बन्ध में 4 आर्य सत्य का प्रतिपादन किया :

क्र.	4 आर्य सत्य	अर्थ
1	दु:ख	दु:ख है
2	दु:ख समुदाय	दु:ख का कारण है
3	दु:ख निरोध	दु:ख का निरोध है
4	दु:ख निरोधगामिनी प्रतिपदा	दु:ख निरोध का मार्ग है

अष्टांगिक मार्ग

- सांसारिक दु:खो से मुक्ति के उपाय

क्र.	अष्टांगिक मार्ग	अर्थ
1	सम्यक दृष्टि	वस्तुओं के वास्तविक स्वरुप में देखना
2	सम्यक संकल्प	भौतिक सुखों के त्याग का संकल्प लेना
3	सम्यक वाक्	सदा सच बोलना
4	सम्यक कर्मान्त	सदा सत्कर्म करना
5	सम्यक आजीव	सदाचार के नियमों के अनुकूल जीवन व्यतीत करना
6	सम्यक व्यायाम	विवेकपूर्ण प्रयत्न करना
7	सम्यक स्मृति	सच्ची धारणा रखना
8	सम्यक समाधि	मन की एकाग्रता

त्रिपिटक

- बुद्ध के उपदेशो का संग्रह है : त्रिपिटक
- त्रिपिटक बौद्ध ग्रंथो में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है |
- बुद्ध की मृत्यु के बाद उनकी शिक्षाओ को संकलित कर 3 भागो में बांटा गया, इन्ही को त्रिपिटक कहते है |

क्र.	त्रिपिटक	अर्थ	संकलनकर्ता
1	विनयपिटक	आचार सूत्र - संघ संबंधी नियम	उपाली (आचार का प्रतीक)
2	सुत्तपिटक	धर्मसूत्र - धार्मिक सिद्धांत	आनंद (धर्म का प्रतीक)
3	अभिधम्मपिटक	दार्शनिक सिद्धांत	

RAIPUR - GOL CHOCK , NEAR NIT RAIPUR
BHILAI - SMRITI NAGAR , BHILAI
CONTACT - 9302766733 , 9827112187
Prepared By RAKESH SAO

बौद्ध धर्म की मान्यताएं

क्र.	मान्यताएं	अर्थ
1	अनीश्वरवादी	पुनर्जन्म में विश्वास
2	अनात्मवादी	आत्मा में विश्वास नही
3	क्षणिकवादी	मोक्ष की प्राप्ति
4	कर्मवादी	कर्म के सिद्धांत
5	शुद्धिवादी	आचरण की शुद्धता व पवित्रता
6	अहिंसा	
7	वेदों के प्रति उदासीनता	
8	कर्मकांडो का निषेध	
9	रीति-रिवाजो की अस्वीकृति	
10	वर्ण व्यवस्थता	बौद्ध धर्म में वर्ण व्यवस्थता को स्वीकार तो किया गया लेकिन उसने ब्राम्हण वर्ण की सर्वोच्च सामाजिक स्थिति को स्वीकार नही किया	

बौद्ध संगीति (सम्मलेन)

बौद्ध सम्मलेन	वर्ष	स्थान	शासक	अध्यक्ष	विशेष
प्रथम बौद्ध सम्मलेन	483 ई.पू.	सप्तपर्णी गुफा (राजगृह)	अजातशत्रु	महाकश्यप	• बौद्ध धर्म के 2 पिटको का संग्रह किया गया - 1. विनयपिटक 2. सुत्तपिटक • अजातशत्रु ने बुद्ध के अवशेषों को लेकर राजगृह में "विश्व शांति स्तूप" बनवाया |
द्वितीय बौद्ध सम्मलेन	383 ई.पू.	बालुकाराम (वैशाली)	कालाशोक	सर्वकामी (सब्बकामी)	बौद्ध धर्म का 2 संघ में विभाजन हो गया - 1. स्थावीर (रूढ़िवादी) 2. महासंथिक (प्रगतिशील)
तृतीय बौद्ध सम्मलेन	251 ई.पू.	पाटलिपुत्र	अशोक	मोगलीपुत्त तिस्स	• अभिधम्म पिटक का संकलन • तिस्स ने **कथावस्तु** ग्रन्थ की रचना की |
चतुर्थ बौद्ध सम्मलेन	100 ई.पू.	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्क	अध्यक्ष - वसुमित्र उपाध्यक्ष - अश्वघोष	• बौद्ध धर्म दो सम्प्रदायों में बंट गया - 1. हीनयान 2. महायान • नागार्जुन को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए चीन भेजा |
पांचवी बौद्ध सम्मलेन	630 ई.	कन्नौज	हर्षवर्धन	ह्वेनसांग	• महायान मत की श्रेष्ठता सिद्ध हुई |

हीनयान व महायान में अंतर

- कनिष्क के शासनकाल में संपन्न चतुर्थ बौद्ध संगीति में बुद्ध धर्म हीनयान एवं महायान नामक दो स्पष्ट एवं स्वतंत्र संप्रदाय में बंट गया |
- महायान में बुद्ध को देवता माना गया तथा उनकी पूजा की जाने लगी |

मुख्य बिंदु	हीनयान	महायान
1. लोग	निम्नमार्गी लोग	उत्कृष्टमार्गी लोग
2. सिद्धांत	रूढ़िवादी	प्रगतिशील
3. मान्यता	बुद्ध को महापुरुष माना जाता है	बुद्ध को देवता माना जाता है
4. मूर्तिपूजा	मूर्तिपूजा का विरोध	मूर्तिपूजा के समर्थक
5. केंद्र	कौशाम्बी	मथुरा
6. ग्रन्थ की भाषा	पाली	संस्कृत
7. निर्वाण	व्यक्तिगत निर्वाण	सभी के लिए निर्वाण

RAIPUR - GOL CHOCK , NEAR NIT RAIPUR
BHILAI - SMRITI NAGAR , BHILAI
CONTACT - 9302766733 , 9827112187
Prepared By RAKESH SAO

वज्रयान

- जन्म - 7वीं शताब्दी
- केंद्र - पूर्वी भारत
- बुद्ध की पत्नी के रूप में तारा की पूजा
- इस सम्प्रदाय के कारण बौद्ध धर्म पतन की ओर अग्रसर
- **सुल्तानी युग** में बौद्धों की वज्रयान शाखा सबसे प्रभावशाली थी |

प्रमुख बौद्ध विश्वविधालय

क्र.	बौद्ध विश्वविधालय	स्थान	संस्थापक	वंश	शिक्षा
1	नालंदा	बडगांव (बिहार)	कुमार गुप्त I	गुप्त वंश	महायान
2	वल्लभी	भावनगर (गुजरात)	भट्टारक	मैत्रिक वंश	हीनयान
3	ओदंतपुरी	बिहारशरीफ (बिहार)	गोपाल	पाल वंश	महायान
4	विक्रमशिला	अचिंतकगाँव (बिहार)	धर्मपाल	पाल वंश	वज्रयान
5	जगदल्ल	राजशाही (बांग्लादेश)	रामपाल	पाल वंश	तंत्रयान
6	सोमपुर	नवागांव (बांग्लादेश)		पाल वंश	

प्राचीनकाल में बौद्ध शिक्षा के 3 प्रमुख केंद्र

1. नालंदा : महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रमुख केंद्र था |
2. वल्लभी : हीनयान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रमुख केंद्र था |
3. विक्रमशिला : विक्रमशिला के महाविहार की स्थापना पाल नरेश धर्मपाल ने की थी |

नालंदा विश्वविधालय

- नालंदा विश्वविधालय की स्थापना **कुमारगुप्त प्रथम** ने की थी |
- नालंदा एक विख्यात बौद्ध पीठ एवं विश्वविधालय था |
- यह दक्षिण बिहार में राजगीर के निकट था |
- नालंदा विश्वविधालय बौद्ध धर्म दर्शन के लिए प्रसिद्द था |
- 1193 ई. - **कुतुबुद्दीन बख्तियार खिलजी** ने नालंदा विश्वविधालय को जलाया |

नव नालंदा महाविहार

- 1951 ई. - 'नव नालंदा महाविहार' की स्थापना बिहार सरकार ने किया |
- 'नव नालंदा महाविहार' बौद्ध अध्ययन का आधुनिक केंद्र है |
- इस केंद्र में **बौद्ध एवं पाली अनुसन्धान केंद्र** है |

प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान

क्र.	विद्वान	रचना	विशेष
1	वसुमित्र	महाविभाषसूत्र	बौद्ध धर्म का विश्वकोष
2	अश्वघोष	बुद्ध चरितम	बौद्ध धर्म का महाकाव्य
3	नागार्जुन	माध्यमिक कारिका	सापेक्षता का सिद्धांत या शुन्यता का सिद्धांत
4	असंग व वसुबन्धु	अभिधम्म कोष	
5	बुद्धघोष	हीनयान सम्प्रदाय	
6	बुद्धपालित व भावविवेक	प्रतिपादित शून्यवाद	

नागार्जुन

- नागार्जुन **कनिष्क के दरबार** का एक महान विभूति था |
- नागार्जुन की तुलना **मार्टिन लूथर** से की जाती है |
- व्हेनसांग ने नागार्जुन को **'संसार की चार मार्गदर्शक शक्तियों में से एक'** कहा है |
- रचना : **'माध्यमिक कारिका'** - सापेक्षता सिद्धांत , शुन्यता का सिद्धांत
- माध्यमिक या शुन्यता का सिद्धांत का प्रतिपादन सर्वप्रथम नागार्जुन ने किया |
- चीनी मान्यता के अनुसार नागार्जुन ने चीन की यात्रा कर वहां बौद्ध शिक्षा प्रदान की |

एशिया के ज्योति पुंज (Light of Asia)

- रचनाकार - एडविन अर्नाल्ड
- एशिया के ज्योति पुंज - गौतम बुद्ध
- गौतम बुद्ध के जीवन पर **एडविन अर्नाल्ड ने 'Light of Asia'** नामक पुस्तक लिखी |

बुद्ध प्रतिमा

क्र.	बुद्ध प्रतिमा	स्थान	संस्थापक	काल	वंश	शिक्षा
1	बुद्ध की खड़ी प्रतिमा		कुमार गुप्त I	कुषाण काल	गुप्त वंश	बौद्ध शिक्षा
2	भूमिस्पर्श मुद्रा	सारनाथ	भट्टारक	गुप्त काल	मैत्रिक वंश	हीनयान

बुद्ध की 80 फूट की प्रतिमा

- स्थान - बौद्ध गया
- निर्माता - जापान के **दाईजोकियो** संप्रदाय के द्वारा
- भारत में पहले जिस मानव प्रतिमाओ को पूजा गया वह थी : बुद्ध की
  बौद्ध धर्म के महायान शाखा के अनुयायियो ने सर्वप्रथम बुद्ध की मूर्तियां स्थापित करके उनकी पूजा प्रारंभ की |
- देश में किस धर्म ने सर्वप्रथम मूर्ति पूजा की नींव रखी : बौद्ध धर्म

बौद्ध स्तूप

क्र.	बौद्ध स्तूप	चित्र	स्थान	राज्य	निर्माता	विशेष
1	शांति स्तूप		राजगीर	बिहार	अजातशत्रु	विश्व का सबसे ऊँचा 'विश्व शांति स्तूप'
2	साँची स्तूप		साँची	मध्यप्रदेश	अशोक	
3	शान्ति स्तूप		वैशाली	बिहार		
4	महाबोधि मंदिर		बोधगया	बिहार		
5	धमेख स्तूप		सारनाथ	उत्तर प्रदेश		

6	रामाभर स्तूप		कुशीनगर	उत्तर प्रदेश		
7	शांति स्तूप		धौलागिरी	ओड़िसा		
8	शांति स्तूप		लेह	कश्मीर		
9	अमरावती स्तूप		अमरावती	आन्ध्रप्रदेश		
10	महा स्तूप		थोटलाकोंडा	आन्ध्रप्रदेश		
11	बावीकोंडा स्तूप	Bavikonda	बावीकोंडा	आन्ध्रप्रदेश		

12	डोरकोठार स्तूप		डोरकोठार	मध्यप्रदेश		
13	दरोदुल स्तूप		दरोदुल	सिक्किम		
14	पीस पैगोड़ा स्तूप		दार्जलिंग	पं. बंगाल		
15	सालुगारा स्तूप		सालुगारा	पं. बंगाल		

बुद्ध के जीवन से सम्बंधित स्तूप स्थित है :

1. बोद्धगया का स्तूप : बुद्ध की ज्ञान प्राप्ति से
2. सारनाथ : धर्मचक्रपरिवर्तन से
3. कुशिनारा : बुद्ध की मृत्यु

विश्व शांति स्तूप

- निर्माण - 483 ई.पू.
- स्थान - राजगृह
- निर्माता - अजातशत्रु
- अजातशत्रु ने बुद्ध के अवशेषों को लेकर राजगृह में “विश्व शांति स्तूप” बनवाया |
- विश्व का पहला बौद्ध स्तूप
- विश्व का सबसे ऊँचा स्तूप
  बिहार के राजगीर के पहाड़ियों पर स्थित ‘विश्व शांति स्तूप’ विश्व का सबसे ऊँचा स्तूप है |
- ऊंचाई - 400 मीटर

महाबोधि मंदिर

- स्थान - बोधगया
- निर्माता - अजातशत्रु
- अजातशत्रु ने बुद्ध के अवशेषों को लेकर राजगृह में "विश्व शांति स्तूप" बनवाया |

बौद्ध मठ

- भारत का सबसे बड़ा बौद्ध मठ स्थित है : अरुणाचल प्रदेश
- **बौद्ध मठो में , पवरन नामक समारोह**
  वर्षा ऋतू के दौरान मठो में प्रवास के समय भिक्षुओ द्वारा किये गये अपराध की स्वीकृति का अवसर होता था |
- **चैत्य व विहार में अंतर**

चैत्य	विहार
बौद्ध भिक्षुओ का पूजा स्थल	बौद्ध भिक्षुओ का निवास स्थल

महत्वपूर्ण तथ्य

- अशोक का सिंह स्तंभ शीर्ष स्थित है : सारनाथ
- प्रथम शताब्दी इसवी में किस भारतीय बौद्ध भिक्षुक को चीन भेजा गया : नागार्जुन
- शुन्यता के सिद्धांत का सर्वप्रथम प्रतिपादन करने वाले बौद्ध दार्शनिक का नाम है : नागार्जुन
- नागार्जुन किस बौद्ध संप्रदाय के थे : माध्यमिक
- होयसलेश्वर मंदिर समर्पित है : शिव को
- श्रवणगोलबेला में गोमतेश्वर की विशाल प्रतिमा स्थापित किया था : चामुंडराय ने
- करमापा लामा तिब्बत के बुद्ध संप्रदाय के किस वर्ग का है : कंग्युपा

गौतम बुद्ध
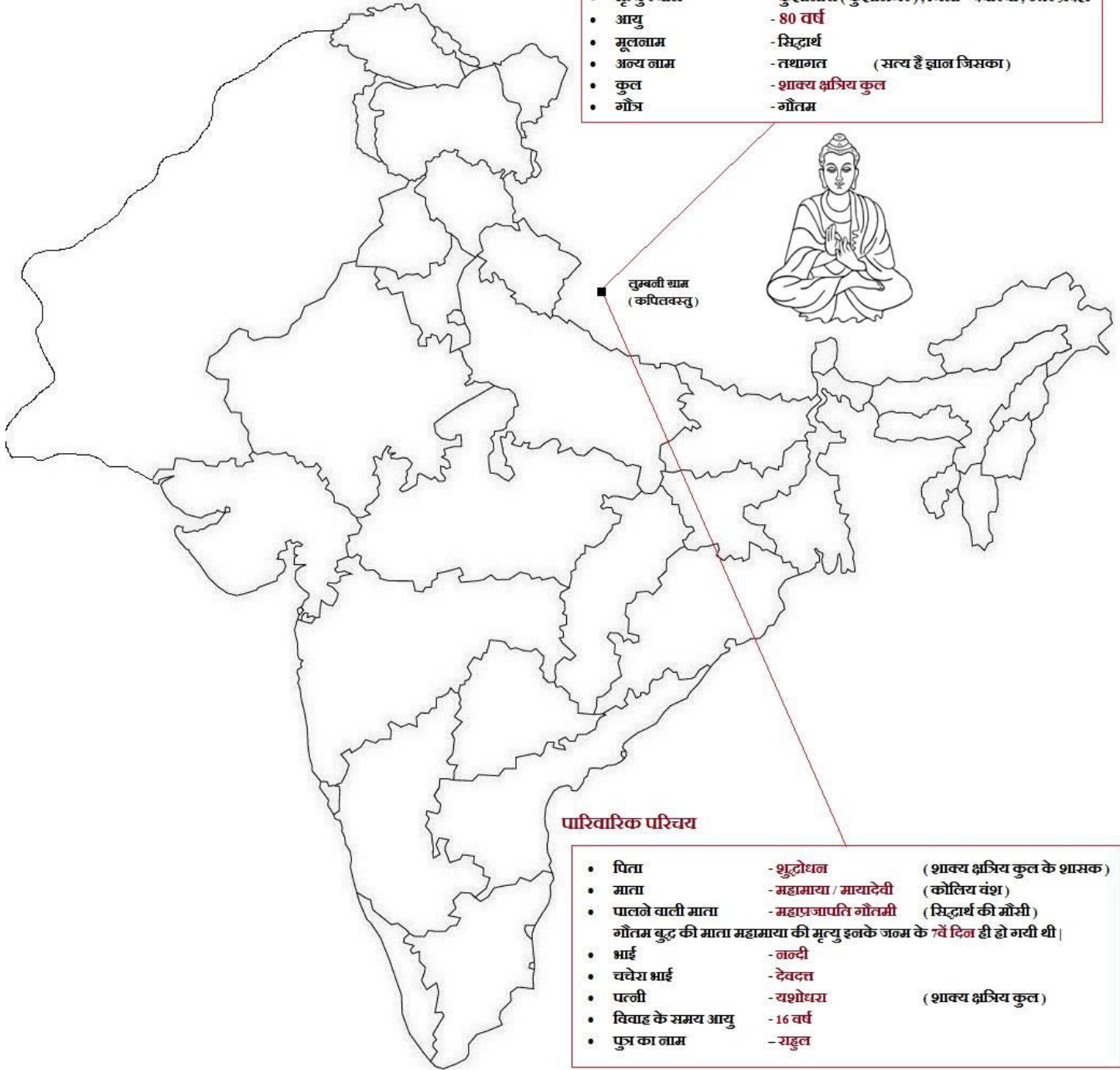
सामान्य परिचय
• जन्म - 563 ई.पू. (दिन – वैशाख पूर्णिमा)
• जन्म स्थान - लुम्बनी ग्राम , राज्य - कपिलवस्तु , नेपाल के तराई में
• स्त्रोत - अशोक के रुमिनदेई स्तंभ अभिलेख
• मृत्यु - 483 ई.पू. (दिन – वैशाख पूर्णिमा)
• मृत्यु स्थान - कुशीनारा (कुशीनगर) , जिला – देवरिया , उत्तर प्रदेश
• आयु - 80 वर्ष
• मूलनाम - सिद्धार्थ
• अन्य नाम - तथागत (सत्य है ज्ञान जिसका)
• कुल - शाक्य क्षत्रिय कुल
• गौत्र - गौतम
लुम्बनी ग्राम
(कपिलवस्तु)
पारिवारिक परिचय
• पिता - शुद्धोधन (शाक्य क्षत्रिय कुल के शासक)
• माता - महामाया / मायादेवी (कोलिय वंश)
• पालने वाली माता - महाप्रजापति गौतमी (सिद्धार्थ की मौसी)
गौतम बुद्ध की माता महामाया की मृत्यु इनके जन्म के 7वें दिन ही हो गयी थी |
• भाई - नन्दी
• चचेरा भाई - देवदत्त
• पत्नी - यशोधरा (शाक्य क्षत्रिय कुल)
• विवाह के समय आयु - 16 वर्ष
• पुत्र का नाम – राहुल

गौतम बुद्ध
महापरिनिर्वाण
• स्थान - कुशीनारा (कुशीनगर) , जिला – देवरिया , उत्तर प्रदेश
• 483 ई.पू. - गौतम बुद्ध की मृत्यु
• आयु - 80 वर्ष
• जन्म - 563 ई.पू. (दिन – वैशाख पूर्णिमा)
• जन्म स्थान - लुम्बनी ग्राम , राज्य - कपिलवस्तु , नेपाल के तराई में
• स्त्रोत - अशोक के रुमिनदेई स्तंभ अभिलेख
महाभिनिष्क्रमण (गृह त्याग)
• गृहत्याग - 29 की उम्र में (महाभिनिष्क्रमण)
• दिन - पूर्णमासी
लुम्बनी ग्राम
(कपिलवस्तु) नेपाल के तराई
कुशीनगर
(मल्ल)
ऋषिपतनम (सारनाथ)
बोधगया
सम्बोधि (ज्ञान प्राप्ति)
• 6 वर्ष तप करने करने के पश्चात् 35 वर्ष की उम्र में बैशाख पूर्णिमा के दिन सिद्धार्थ को ज्ञान की प्राप्ति हुई | इसे बौद्ध धर्म में सम्बोधि कहा गया |
• ज्ञान प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ बुद्ध कहलाये तथा वह स्थान बोधगया कहलाया |
• आयु - 35 वर्ष
6 वर्ष तप करने करने के पश्चात् 35 वर्ष की उम्र में (29.06.35)
• दिन - बैशाख पूर्णिमा
• स्थल - बोधगया
• नदी - निरंजना नदी के तट पर
• वृक्ष - पीपल वृक्ष के नीचे
• स्मृति - महाबोधि मंदिर
धर्मचक्र प्रवर्तन (प्रथम उपदेश)
सारनाथ में गौतम बुद्ध ने अपने 5 विधार्थी को प्रथम उपदेश दिया :
1. कौण्डिन्य
2. वप्पा
3. भादिया
4. महानामा
5. अस्सागी
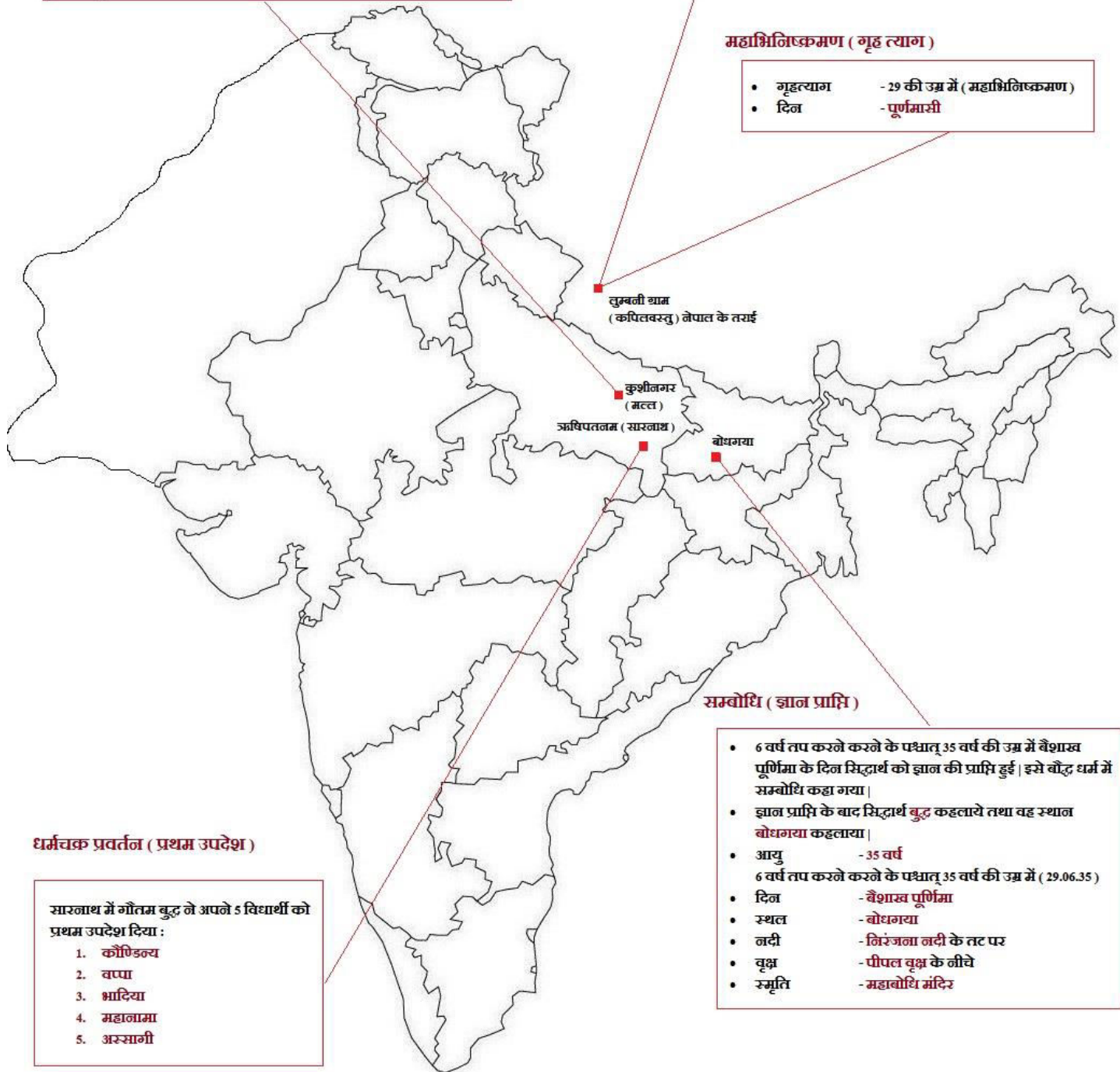
गौतम बुद्ध के गुरु

क्रम	गुरु	स्थान	विशेष
प्रथम गुरु	अलारकलाम	वैशाली	सांख्य दर्शन के आचार्य
दूसरे गुरु	रुद्रकरामपुत्त	राजगृह	

गौतम बुद्ध के शिष्य

प्रथम शिष्य
1. कौण्डिन्य
2. वप्पा
3. भादिया
4. महानामा
5. अस्सागी
प्रथम शिष्या
महाप्रजापति गौतमी (बुद्ध की माता)
शिष्य आनंद के अनुग्रह पर
ऋषिपतनम (सारनाथ)
वैशाली
बुद्ध के प्रिय शिष्य
आनंद
ऊपाली

गौतम बुद्ध के शिष्य

अनाथपिण्डक
प्रसेनजीत
अंगुलीमाल (डाकू)
चुंद
सुभद्द
आनंद
उपाली
महाप्रजापति गौतमी (बुद्ध की माता)
यशोधरा (गौतम बुद्ध की पत्नी)
खेमा (बिम्बिसार की पत्नी)
आम्रपाली (वैशाली की नगरवधु)
श्रावस्ती
पावा
कुशीनगर
कौशाम्बी
सारनाथ
वाराणसी
वैशाली
राजगृह
उदयन
पिण्डोला भारद्वाज
बिम्बिसार
मुख्य कश्यप
नदी कश्यप
गया कश्यप
यश
कौण्डिन्य
वप्पा
भादिया
महानामा
अस्सागी
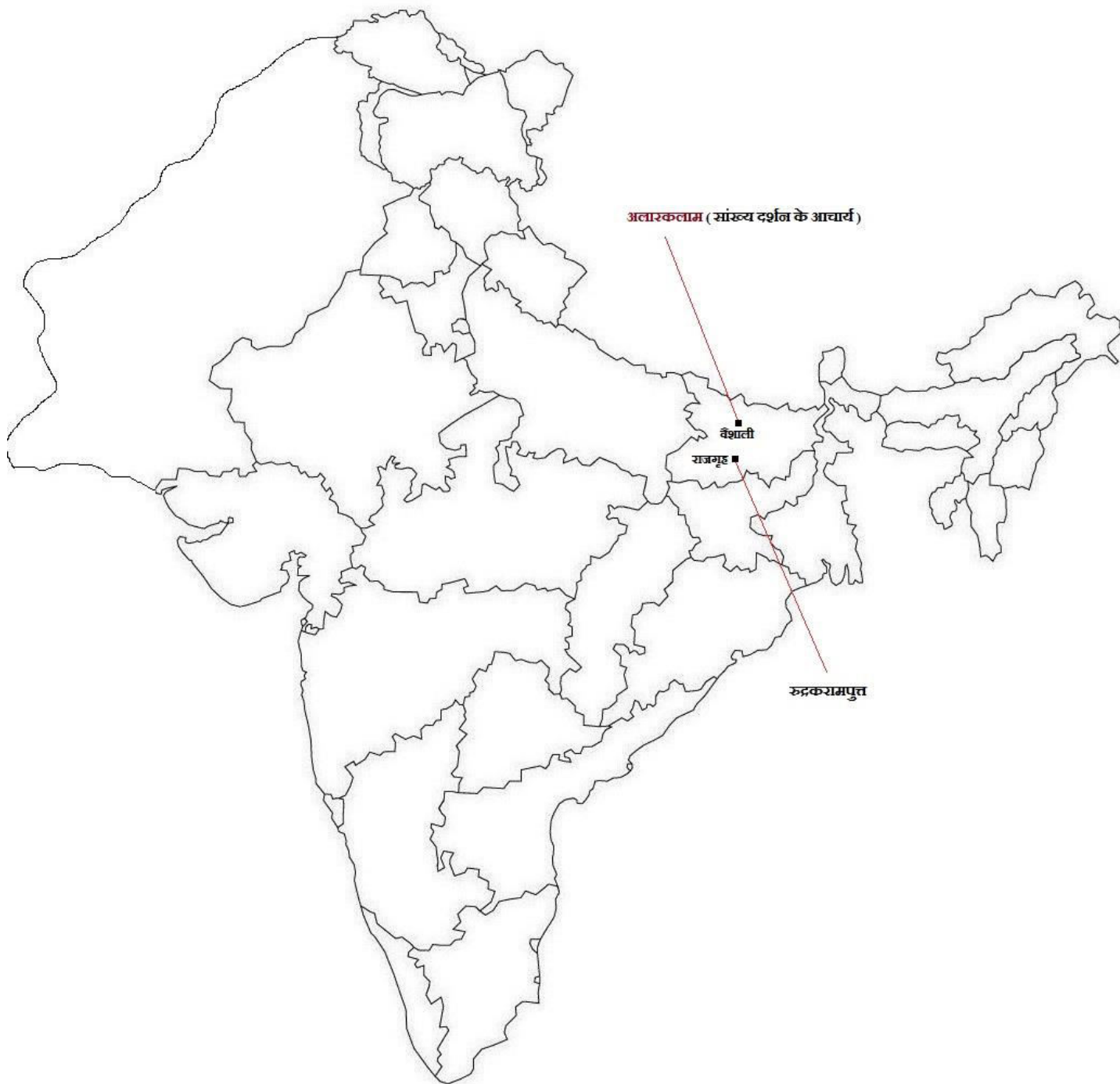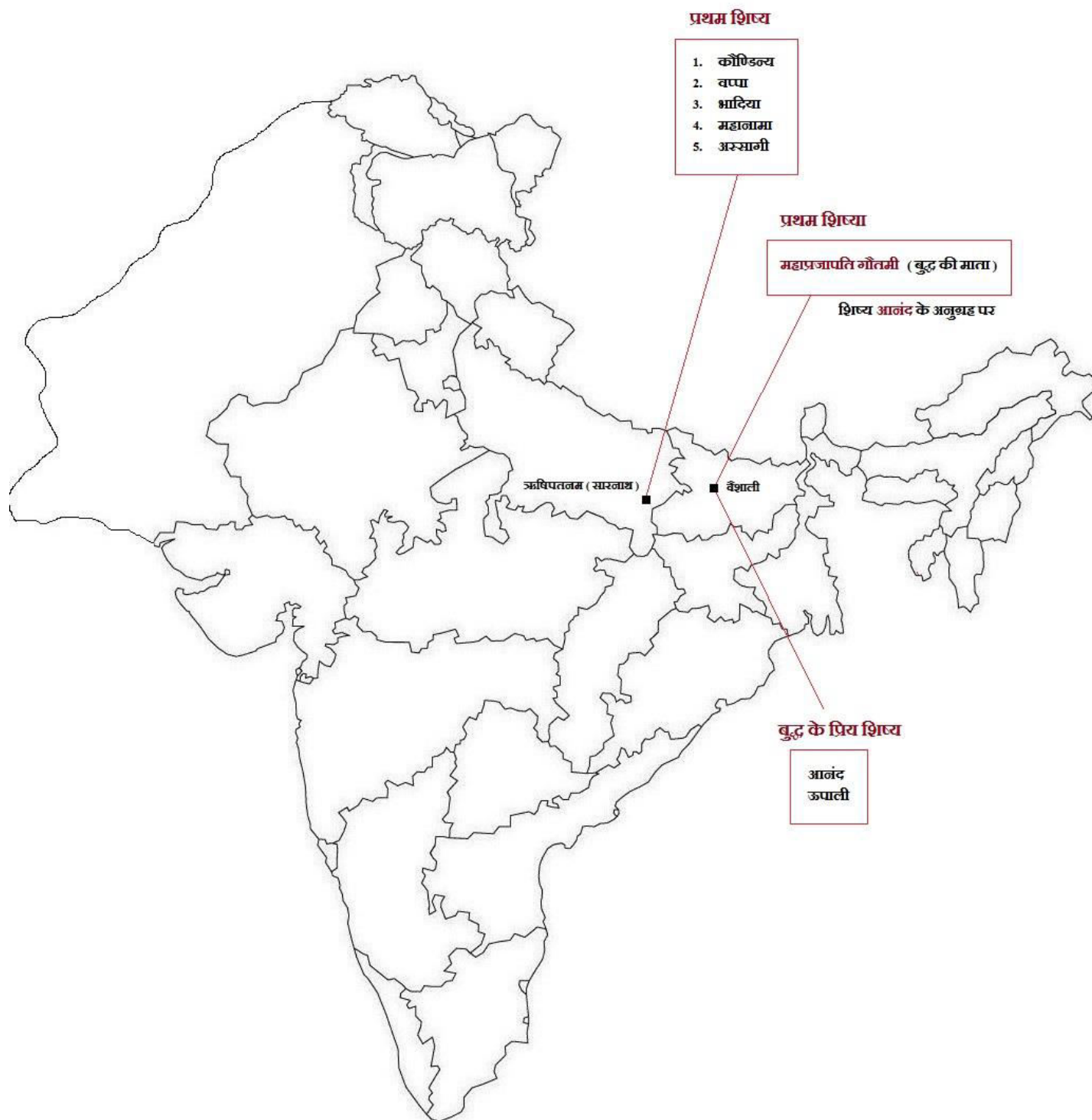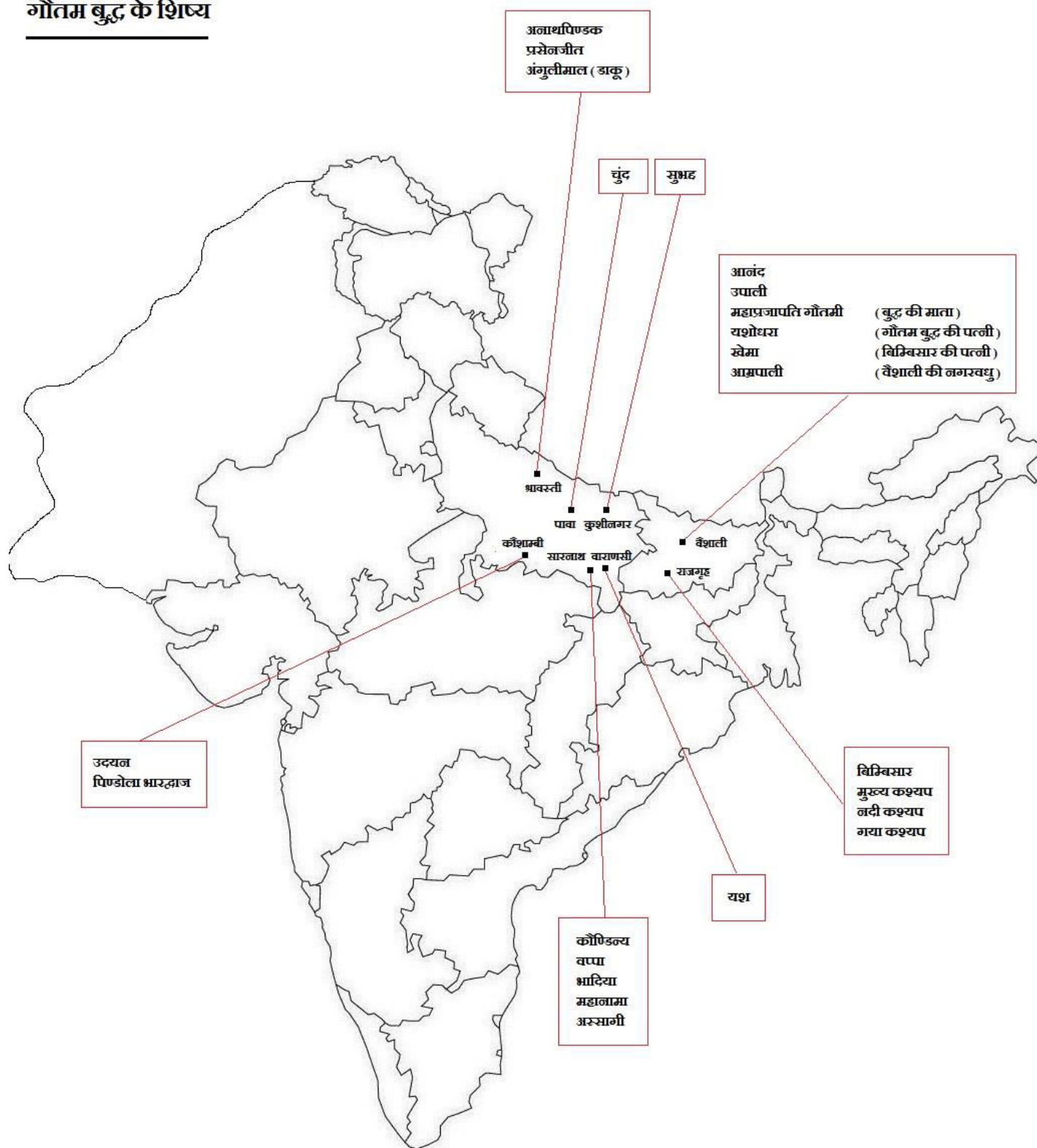
गौतम बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएँ
कपिलवस्तु की सैर
घोड़े का नाम - कन्टक (कंथक)
सारथी का नाम - छन्दक (चाण / चन्ना)
सिद्धार्थ जब कपिलवस्तु की सैर पर निकले तो उन्होंने निम्न 4 दृश्यों को क्रमश: देखा –
1. बूढ़ा व्यक्ति
2. एक बीमार व्यक्ति
3. शव
4. एक सन्यासी
महाभिनिष्क्रमण (गृह त्याग)
सांसारिक कष्टों से दु:खी होकर सिद्धार्थ ने पूर्णमासी के दिन 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया | इसे बौद्ध धर्म में महाभिनिष्क्रमण कहा गया |
गृहत्याग - 29 की उम्र में (महाभिनिष्क्रमण)
दिन - पूर्णमासी
कपिलवस्तु
वैशाली
राजगृह
रुद्रकरामपुत्त (राजगृह)
दूसरे गुरु - रुद्रकरामपुत्त
स्थान - राजगृह
अलारकलाम (वैशाली)
प्रथम गुरु - अलारकलाम (सांख्य दर्शन के आचार्य)
स्थान - वैशाली
महाभिनिष्क्रमण के बाद ज्ञान की खोज में महात्मा बुद्ध , आलार कालाम के आश्रम (वैशाली) पहुँचे तथा उनसे दीक्षा ली | कालाम के आश्रम में उन्होंने तपस्या की किन्तु बुद्ध इससे संतुष्ट नही हुए | आलार कालाम के बाद बुद्ध ने राजगृह के रुद्रकरामपुत्त से शिक्षा ग्रहण की |

गौतम बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएँ
वाराणसी में शिष्य - यश (एक धनी श्रेष्ठीपुत्र)
गौतम बुद्ध सारनाथ से वाराणसी गये और यश नामक एक धनी श्रेष्ठीपुत्र को अपना शिष्य बनाया |
वाराणसी में शिष्यों की संख्या - 60
संघ
गौतम बुद्ध ने वाराणसी में ही संघ की स्थापना की |
सदस्यता की आयु सीमा - 18 वर्ष
उद्देश्य - बहुजन हितार्थ (बहुजन सुखार्थ)
उरूवेला
उरूवेला - बोधगया के समीप एक स्थल
उरूवेला में सिद्धार्थ को 5 साधक मिले :
1. कौण्डिन्य
2. वप्पा
3. भादिया
4. महानामा
5. अस्सागी
उरूवेला में सिद्धार्थ ने तपस्या किया - 27 दिन
सिद्धार्थ को खीर (भोजन) देने वाली महिला - सुजाता (सैनिक की पुत्री)
उरूवेला में 27 दिन की तपस्या करने के पश्चात इन्होनें एक सैनिक की पुत्री सुजाता से भोजन ग्रहण किया | इसके कारण इनके 5 साथी इनका साथ छोड़कर चले गये |
ऋषिपतनम
(सारनाथ)
वाराणसी
उरूवेला
बोधगया
धर्मचक्र प्रवर्तन (प्रथम उपदेश)
गौतम बुद्ध ने सारनाथ में 5 विद्यार्थियो को प्रथम उपदेश दिया जिसे धर्मचक्र प्रवर्तन कहते है |
स्थान - ऋषिपतनम (सारनाथ)
दिन - वैशाख पूर्णिमा
शीर्षक - आचरण की शुद्धता
सारनाथ में गौतम बुद्ध ने अपने 5 विधार्थी को प्रथम उपदेश दिया :
1. कौण्डिन्य
2. वप्पा
3. भादिया
4. महानामा
5. अस्सागी
सम्बोधि (ज्ञान प्राप्ति)
6 वर्ष तप करने करने के पश्चात् 35 वर्ष की उम्र में बैशाख पूर्णिमा के दिन सिद्धार्थ को ज्ञान की प्राप्ति हुई | इसे बौद्ध धर्म में सम्बोधि कहा गया |
ज्ञान प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ बुद्ध कहलाये तथा वह स्थान बोधगया कहलाया |
आयु - 35 वर्ष
6 वर्ष तप करने करने के पश्चात् 35 वर्ष की उम्र में (29.06.35)
दिन - बैशाख पूर्णिमा
स्थल - बोधगया
नदी - निरंजना नदी के तट पर
वृक्ष - पीपल वृक्ष के नीचे
स्मृति - महाबोधि मंदिर
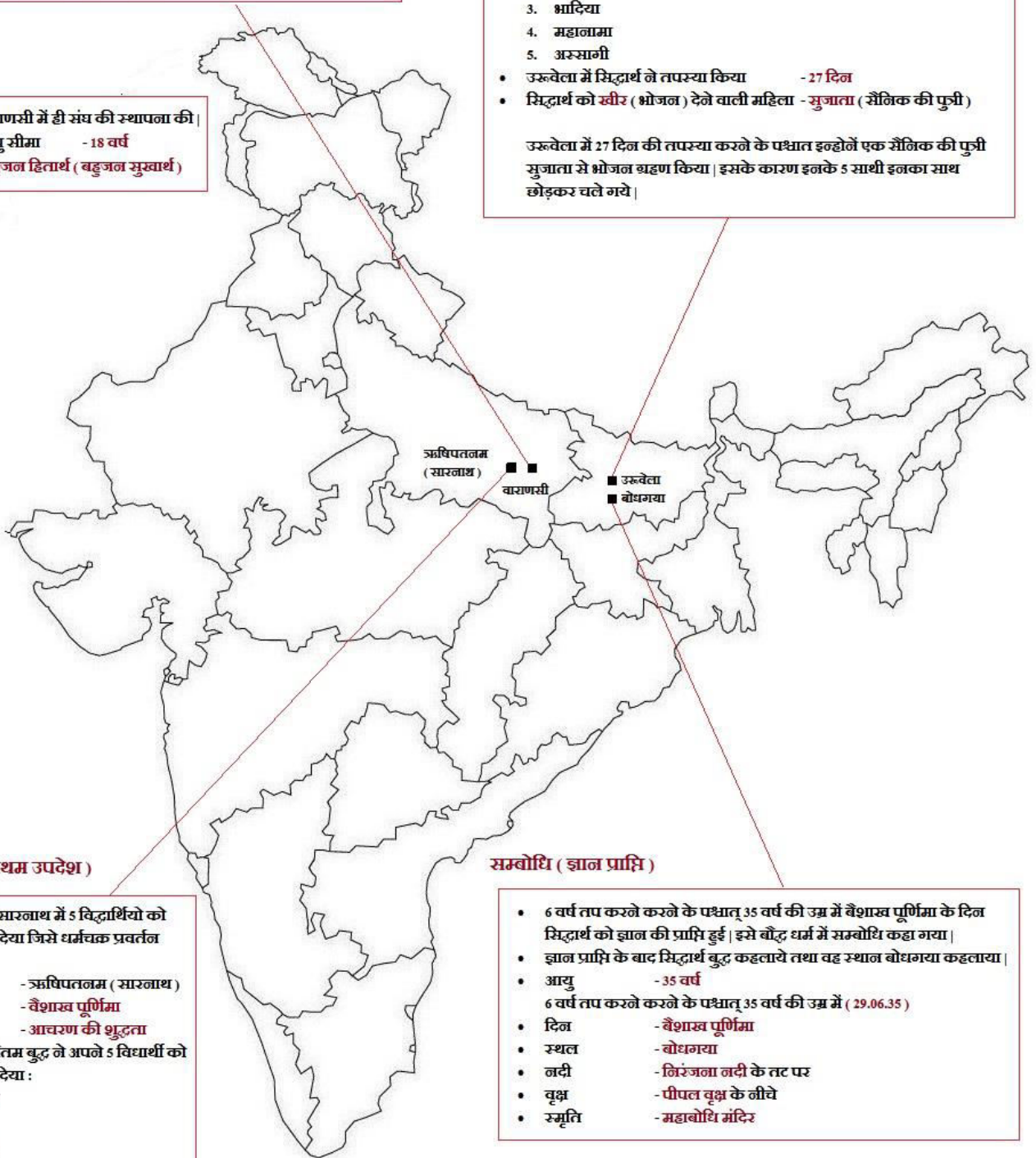
गौतम बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएँ

कपिलवस्तु

- राजगृह में रहते हुए गौतम बुद्ध एक बार अपने गृह नगर कपिलवस्तु आये थे |
- कपिलवस्तु में बुद्ध के आगमन के समय इनके भाई नन्दी का राज्याभिषेक हो रहा था |
- गौतम बुद्ध ने कपिलवस्तु में दीक्षा दिया - नन्दी को
- नियम : पिता की अनुमति
  बुद्ध ने कपिलवस्तु में ही यह नियम बनाया की कोई भी व्यक्ति अपने पिता के अनुमति के बिना बौद्ध धर्म में दीक्षित नहीं हो सकता है |
- महाप्रजापति गौतमी (बुद्ध की मौसी)
  कपिलवस्तु में ही बुद्ध की मौसी महाप्रजापति गौतमी ने संघ में प्रवेश का आग्रह किया लेकिन बुद्ध ने इसे अस्वीकार किया |
- देवदत्त (बुद्ध का चचेरा भाई)
  देवदत्त संघ का प्रधान बनना चाहता था इसकारण इसने बुद्ध पर तीन बार हमला करवाया |
- जीवक (बिम्बिसार का राजवैध)
  तीसरी बार देवदत्त ने गिद्धकूट पहाड़ी से शिलाखण्ड फेंककर बुद्ध को घायल कर दिया इसका उपचार बिम्बिसार के राजवैध जीवक ने किया |

राजगृह (मगध की राजधानी)

- मगध का शासक - बिम्बिसार
- बुद्ध का प्रथम विहार - वेलुवन
- वेलुवन
  बिम्बिसार ने गौतम बुद्ध के निवास के लिए वेलुवन नामक विहार बनवाया |
- कश्यप बंधू (मुख्य कश्यप , नदी कश्यप , गया कश्यप)
  राजगृह में गौतम बुद्ध ने कश्यप बंधुयों को अपने ज्ञान से परास्त किया तथा उन्हें बौद्ध धर्म में दीक्षित किया |

गौतम बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएँ
वैशाली
वैशाली में शिष्य - आनंद
नियम : संघ में महिलाओं का प्रवेश
वैशाली में बौद्ध संघ में स्त्रियों के प्रवेश के लिए बुद्ध ने अनुमति दिया।
बौद्ध संघ में स्त्रियों के प्रवेश के लिए बुद्ध से अनुग्रह किया - शिष्य आनंद
बौद्ध संघ में सर्वप्रथम शामिल होने वाली स्त्री थी
महाप्रजापति गौतमी (बुद्ध की माता)
महाप्रजापति गौतमी के बाद बुद्ध ने संघ में निम्न महिलाओं शामिल किया
1. यशोधरा (गौतम बुद्ध की पत्नी)
2. खेमा (बिम्बिसार की पत्नी)
3. आम्रपाली (वैशाली की नगरवधु)
कौशाम्बी
वैशाली
कौशाम्बी
कौशाम्बी के शासक - उदयन
बुद्ध के शिष्य - पिण्डोला भारद्वाज
उदयन ने पिण्डोला भारद्वाज के अनुग्रह पर शिष्यता ग्रहण की।
घोषितराम विहार - उदयन ने बुद्ध को घोषितराम विहार भेंट किया।

RAIPUR - GOL CHOCK , NEAR NIT RAIPUR
BHILAI - SMRITI NAGAR , BHILAI
CONTACT - 9302766733 , 9827112187
Prepared By RAKESH SAO

बौद्ध धर्म के अनुयायी शासक

बौद्ध संगीति (सम्मलेन)

प्रमुख बौद्ध विश्वविधालय

प्रमुख बौद्ध विश्वविद्यालय

प्राचीनकाल में बौद्ध शिक्षा के 3 प्रमुख केंद्र

बौद्ध स्तूप

लेह
दरोदुल
दार्जलिंग
कुशीनगर
वैशाली
सारनाथ
राजगीर
बोधगया
साँची
डोरकोठार
सालुगारा
धौलागिरी
विश्व शांति स्तूप (अजातशत्रु)
महाबोधि मंदिर
अमरावती
बावीकोंडा

बौद्ध स्तूप

लेह
भारत का सबसे बड़ा बौद्ध मठ
बौद्ध मठ
दरोदुल
दार्जलिंग
कुशीनगर
वैशाली
सारनाथ
राजगीर
बोधगया
साँची
डोरकोठार
सालुगारा
धौलागिरी
विश्व शांति स्तूप (अजातशत्रु)
महाबोधि मंदिर
अमरावती
बावीकोंडा
थोटलाकोंडा

PSC ACADEMY PUBLICATIONS

प्रिय दोस्तों,

PSC ACADEMY द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण पुस्तकें निम्न बुक डिपो से प्राप्त करें |

DELHI

BUDANIYA BOOK SHOP

ADDRESS : SHOP NO. 4, PLOT NO. 701,

NEAR MEERUT SWEETS MUKHARJEE NAGAR,

DELHI, PIN – 110009

PHONE : 099907 65145

ATUL PHOTO STATE

ADDRESS : MUKHERJEE NAGAR ,

MAIN ROAD , NEAR AGRAWAL SWEETS ,

DELHI , PIN – 110009 ,

PHONE : 9540528336

ALLAHABAD

UNIVERSAL BOOK STORE

ADDRESS : 20, MG MARG, CIVIL LINES,

ALLAHABAD, UTTAR PRADESH

PIN : 211001

PHONE : 088745 99611

BHARAT BOOK DEPOT

ADDRESS : 2, JOHNSTON GANJ CROSSING,

SWAMI VIVEKANAND MARG, JOHNSTON GANJ,

ALLAHABAD, UTTAR PRADESH

PIN : 211003

PHONE : 0532 240 1994

PATNA

AMIT BOOK DEPOT

ADDRESS : 1ST FLOOR, TULSI APARTMENT,

GOVIND MITRA ROAD, MAKHANIA KUAN,

LALBAGH, PATNA, BIHAR

PIN : 800004

PHONE : 0612 230 0819

INDIA BOOK CENTRE

ADDRESS : CHOWHATTA, ASHOK RAJPATH RD,

PATNA, BIHAR

PIN : 800004

PHONE : 093049 93754

RANCHI

MANTU BOOK CENTRE

ADDRESS : SARASWATI MARKET,

OPP. KOTWALI THANA, PUSTAK PATH,

UPPER BAZAR, RANCHI, JHARKHAND 834001

PHONE:098353 50390

CROWN BOOK DEPOT

ADDRESS: UPPER BAZAR, NEAR GANDHI CHOWK,

RANCHI, JHARKHAND 834001

PHONE:0651 220 3275

JAIPUR

SHIV BOOK DEPOT

ADDRESS : 154, CHAURA RASTA RD,

BAPU BAZAR, PINK CITY, JAIPUR,

RAJASTHAN , PIN - 302003

PHONE : 0141 231 6523

KHANDELWAL BOOK DEPOT

ADDRESS : NEAR KENDRIYA VIDYALAYA NO 1,

TONK RD, JAIPUR, RAJASTHAN , PIN - 302015

PHONE : 0141 270 7394

BILASPUR

ELLORA BOOK DEPOT

ADDRESS : BESIDE SBI MAIN BRANCH,

OLD HIGH COURT ROAD, BILASPUR,

CHHATTISGARH

PHONE : 077526 06061

SHREE BOOK MALL

ADDRESS : GANDHI CHOWK,

OLD HIGH COURT ROAD,

BILASPUR, CHHATTISGARH 495001

PHONE:077522 20920

RAIPUR

SURESH BOOK DEPOT

ADDRESS: OPPOSITE I.C.I.C.I BANK,

MAIN RD, SADAR BAZAR, RAIPUR,

CHHATTISGARH 492001

PHONE:098271 61465

SARASWATI BOOK DEPO

ADDRESS : GOL BAZAR,

JAY STAMBH CHOWK,

RAIPUR , CHHATTISGARH

BHILAI

BANTI BOOK STALL

ADDRESS : IN FRONT OF ANIL BOOK DEPOT,

'A' MARKET , SECTOR – 6

BHILAI , CHHATTISGARH

RAJAN'S BOOK STORE

ADDRESS : 24, D MARKET , SECTOR - 6,

BHILAI , CHHATTISGARH , 490006

कूरियर सुविधा द्वारा पुस्तकें प्राप्त करें

- **PAYTM** द्वारा **9827112187** पर भुगतान करें |
- अपने घर का पता **9827112187** पर **WHATSAPP** करें |
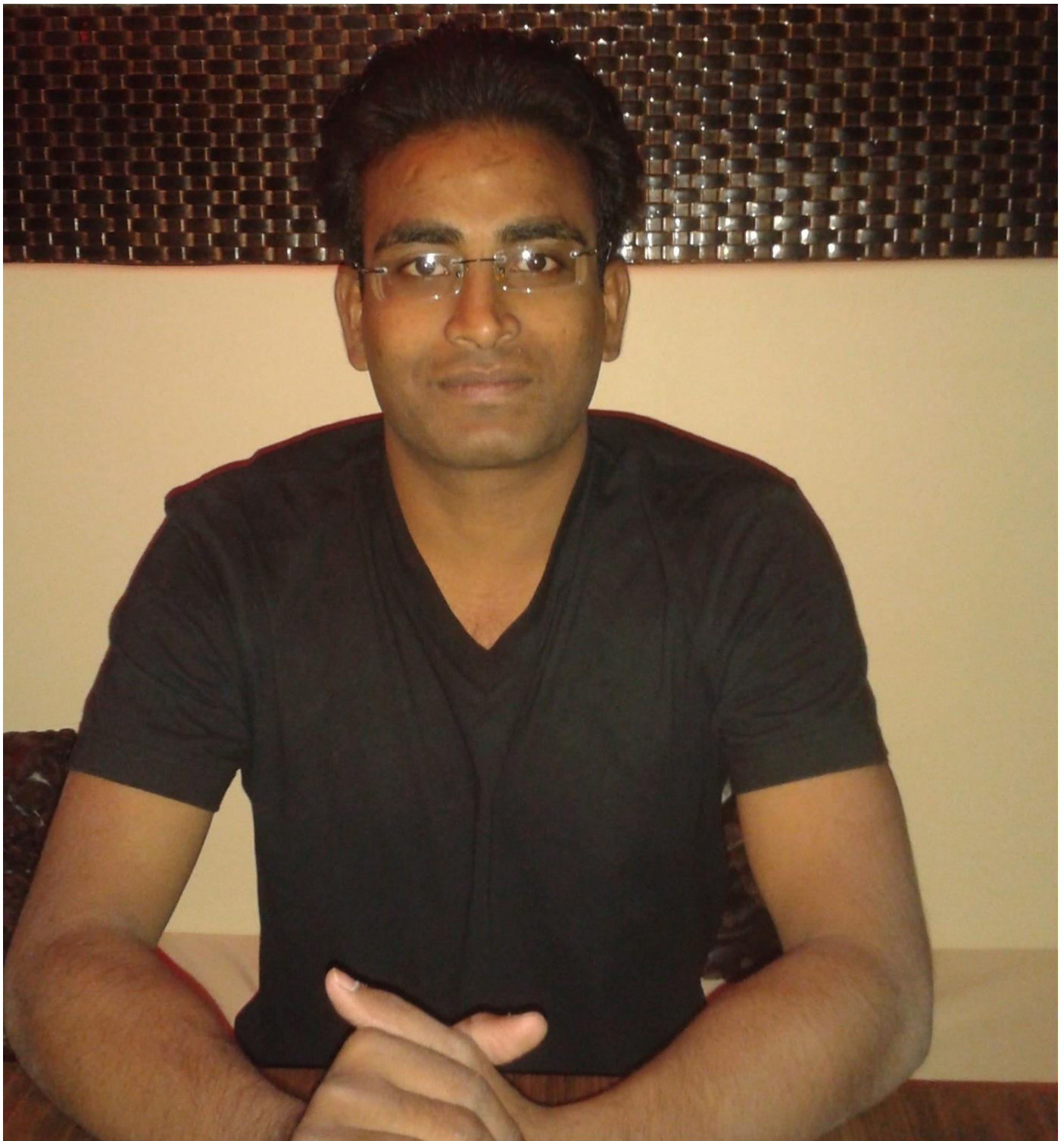
RAKESH SAO

CSE (BIT , Durg)

PSC ACADEMY

STATE ENGINEERING SERVICES SELECTION

2nd RANK

PUNESHWAR PRASAD VERMA